सूक्ष्म प्रबंध योजना निर्माण हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम

दिनांक 21–23 / 07 / 2026

मध्यप्रदेश राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर में तीन दिवसीय 21 / 07 / 2026 से दिनांक 23 / 07 / 2026 तक प्रशिक्षण का आयोजन किया गया जिसमें प्रथम दिवस में मध्यप्रदेश राज्य वन अनुसंधान संस्थान के संचालक श्री प्रदीप वासुदेवा भा.व.से. के द्वारा उद्घाटन किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रायोजक अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक (सं.व.प्र.) म.प्र. भोपाल है। प्रशिक्षण में विषय विशेषज्ञों के द्वारा सूक्ष्म प्रबंध योजना से संबंधित विभिन्न विषयों पर PPT के माध्यम से जानकारी प्रदान की गयी। इसके उपरांत दिनांक 22 जुलाई 2026 को वन परिक्षेत्र निवास की ग्राम वन समिति मनेरी में सहभागी ग्रामीण समीक्षा (PRA) का व्यावहारिक अभ्यास कराया गया। विषय विशेषज्ञ श्री आर. बी. शर्मा (सेवानिवृत्त मुख्य वन संरक्षक), श्री ओंकार सिंह राणा (सेवानिवृत्त उप वन संरक्षक) एवं श्री अभिषेक शर्मा के मार्गदर्शन में ग्रामीणों के साथ नजरी नक्शा, संसाधन चित्रण एवं समय चित्रण जैसी गतिविधियाँ कराई गईं।

इस अवसर पर श्री आर. बी. शर्मा ने वन संरक्षण एवं प्रबंधन में जनभागीदारी के महत्व पर जोर देते हुए कहा कि बिगड़े वनों के सुधार के लिए स्थानीय समुदाय की सक्रिय सहभागिता आवश्यक है। उन्होंने लैंडस्केप एप्रोच की उपयोगिता बताते हुए कहा कि माइक्रोप्लान केवल वन विकास का दस्तावेज नहीं, बल्कि ग्राम स्तर पर सामाजिक एवं आर्थिक विकास का प्रभावी माध्यम भी है। उन्होंने वन समितियों के अभिलेख संधारण, पारदर्शिता, वार्षिक ऑडिट एवं नियमित अनुश्रवण को बेहतर वन प्रबंधन के लिए आवश्यक बताया।

कार्यक्रम के अंतिम दिवस प्रशिक्षार्थियों ने माइक्रोप्लान तैयार करने से जुड़ी समस्याओं पर विशेषज्ञों से चर्चा कर समाधान प्राप्त किया। समापन अवसर पर संस्थान के संचालक श्री प्रदीप वासुदेवा (भा.व.से.) ने विभिन्न वन मंडलों (दक्षिण बैतूल, रायसेन, उत्तर पन्ना, भिंड, हरदा, इंदौर एवं कटनी) से आए 33 प्रतिभागियों को प्रमाण–पत्र वितरित किए एवं कार्यक्रम के अंत में मुख्य अन्वेषक डॉ. प्रतीक्षा चतुर्वेदी ने सभी का आभार व्यक्त किया। इस सफल आयोजन में संस्थान के श्री एस. एस. रघुवंशी वरिष्ठ अनुसंधान अधिकारी, डॉ. डी. के. कुलदीप, प्रियंका वर्मा, सोनल चतुर्वेदी, श्री सत्यम सक्सेना, श्री हिमांशु कुशवाहा, अजय लविश्कर, विनीत मेहरा एवं श्री सिद्धार्थ पगारे आदि भी उपस्थित रहे।

सूक्ष्म प्रबंध योजना
प्रशिक्षण कार्यक्रम

सूक्ष्म प्रबंध योजना निर्माण हेतु
प्रशिक्षण कार्यक्रम

प्रबंध योजना निर्माण हेतु
प्रशिक्षण कार्यक्रम
आयोजक
मध्यप्रदेश राज्य वन
अनुसंधान संस्थान, जबलपुर

राज्य वन अनुसंधान संस्थान जबलपुर

नईदुनिया सिटी

जबलपुर

शुभ प्रभात

शहर की वायु गुणवत्ता

गुप्तेश्वर		
एक्यूआइ	पीएम-10	पीएम-2.5
48	36	29
(संतोषजनक)		
मढ़ाताल		
39	28	21
(संतोषजनक)		
सुहागी		
21	19	15
(संतोषजनक)		

तीन दिवसीय प्रशिक्षण से वन प्रबंधन को मिलेगी नई दिशा, बनेगा संतुलन

एसएफआरआइ में कार्यशाला का शुभारंभ, ग्राम विकास और जनसहभागिता पर जोर

नईदुनिया प्रतिनिधि, जबलपुर : वन क्षेत्रों के वैज्ञानिक, आवश्यकता-आधारित और सहभागी प्रबंधन को मजबूत बनाने की दिशा में राज्य वन अनुसंधान संस्थान ने महत्वपूर्ण पहल की है। संस्थान में बुधवार से शुरू हुए तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रदेश के विभिन्न वन मंडलों के अधिकारियों और मैदानी अमले को सूक्ष्म प्रबंधन योजना (माइक्रो प्लान) तैयार करने और उसके प्रभावी क्रियान्वयन का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। प्रशिक्षण का उद्देश्य वन संरक्षण, जैव विविधता संवर्धन और ग्रामीण आजीविका को एकीकृत विकास माडल से जोड़ना है। प्रशिक्षण का शुभारंभ संस्थान के संचालक प्रदीप वासुदेवा भावसे ने किया। उन्होंने कहा कि बदलती पर्यावरणीय चुनौतियों के बीच वन संसाधनों का विज्ञानी एवं योजनाबद्ध प्रबंधन समय की आवश्यकता है। सूक्ष्म प्रबंधन योजना स्थानीय जरूरतों और उपलब्ध प्राकृतिक एवं मानव संसाधनों के आकलन पर आधारित विकास दस्तावेज है, जो वनाश्रित समुदायों की भागीदारी के साथ तैयार किया जाता है। उन्होंने बताया कि इस योजना का उद्देश्य वन संसाधनों का संतुलित एवं सतत उपयोग सुनिश्चित करना, जैव विविधता का संरक्षण करना तथा जनसहभागिता आधारित वन प्रबंधन को बढ़ावा देना है। इसके माध्यम से वन संरक्षण के साथ ग्रामीण आजीविका और सामाजिक विकास को भी मजबूती मिलती है।

राज्य वन अनुसंधान सस्थान मे तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम मे उपस्थित सदस्य व अतिथि। ● सौजन्य आयोजक

प्रशिक्षण में भोपाल से आए विषय विशेषज्ञ आरबी शर्मा (सेवानिवृत्त मुख्य वन संरक्षक), ओंकार सिंह राणा (सेवानिवृत्त उप वन संरक्षक) तथा अभिषेक शर्मा ने माइक्रो प्लान की अवधारणा, निर्माण प्रक्रिया, पूर्व तैयारी और सहभागी ग्रामीण समीक्षा (पीआरए) जैसे विषयों पर व्यावहारिक जानकारी दी। संस्थान की मुख्य अन्वेषक डा. प्रतीक्षा चतुर्वेदी ने स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप विकास कार्यों के लिए माइक्रो प्लान की उपयोगिता पर प्रकाश डाला। प्रशिक्षण में वन मंडल दक्षिण बैतूल, रायसेन, उत्तर पन्ना, भिंड, हरदा, इंदौर और कटनी से आए वन परिक्षेत्र अधिकारी, वनपाल और वनरक्षक भाग ले रहे हैं। इस अवसर पर संस्थान के वरिष्ठ अनुसंधान अधिकारी एसएस रघुवंशी, विनय कुमार कोरी, डा. डीके कुलदीप, प्रियंका वर्मा, सोनल चतुर्वेदी, सत्यम सक्सेना, अनमोल लक्की एक्का, हिमांशु कुशवाहा, अभिषेक सोनी एवं सिद्धार्थ पगारे आदि उपस्थित रहे।

वन संरक्षण में जनभागीदारी सबसे जरूरी

मप्र राज्य वन अनुसंधान संस्थान में सूक्ष्म प्रबंधन योजना पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन

नईदुनिया प्रतिनिधि, जबलपुर : मध्य प्रदेश राज्य वन अनुसंधान संस्थान सूक्ष्म प्रबंधन योजना (माइक्रोप्लान) निर्माण पर आधारित तीन दिवसीय विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन शुक्रवार को हुआ। प्रशिक्षण के दौरान विशेषज्ञों ने बताया कि ग्राम स्तर पर स्थानीय समुदायों को साथ लेकर तैयार किए गए माइक्रोप्लान वन संरक्षण के साथ-साथ ग्रामीणों के सामाजिक एवं आर्थिक विकास का भी सशक्त माध्यम बन सकते हैं। प्रतिभागियों ने निवास वन परिक्षेत्र के ग्राम मनेरी में आयोजित सहभागी ग्रामीण समीक्षा (पीआरए) गतिविधियों में भाग लेकर व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त किया। जिसमें एसडीओ आकाशपुरी गोस्वामी, वन परिक्षेत्र अधिकारी मेघा पटेल एवं उनके वन अमले ने प्रतिभागियों को आवश्यक सहयोग एवं समन्वय उपलब्ध कराया।

तीन दिवसीय प्रशिक्षण के समापन पर प्रतिभागियों को प्रशस्ति पत्र दिए गए। ● सौ. आयोजक

विभिन्न तकनीकों का व्यवहारिक प्रशिक्षण दिया: प्रशिक्षण में भोपाल से आए विषय विशेषज्ञ आरबी शर्मा (सेवानिवृत्त मुख्य वन संरक्षक), ओंकार सिंह राणा (सेवानिवृत्त उप वन संरक्षक) तथा अभिषेक शर्मा ने ग्रामीणों के सहयोग से नजरी नक्शा, संसाधन मानचित्रण, समय चित्रण सहित सहभागी योजना निर्माण की विभिन्न तकनीकों का व्यवहारिक प्रशिक्षण दिया। अतिथियों ने बताया कि वन संरक्षण और प्रबंधन में जनभागीदारी सबसे महत्वपूर्ण आधार है। बिगड़े हुए वन क्षेत्रों को पुनः समृद्ध वनों में परिवर्तित करने के लिए स्थानीय समुदायों की सक्रिय सहभागिता अनिवार्य है। लैंडस्केप एप्रोच की उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि माइक्रोप्लान केवल वन विकास का दस्तावेज नहीं, बल्कि ग्राम स्तर पर समग्र सामाजिक एवं आर्थिक विकास का प्रभावी माध्यम है। उन्होंने वन समितियों में अभिलेख संधारण, पारदर्शिता, वार्षिक आडिट और ग्राम सहभागिता को सुदृढ़ वन प्रबंधन की आधारशिला बताया।

व्यावहारिक चुनौतियों पर चर्चा: समापन सत्र में प्रतिभागियों ने माइक्रोप्लान तैयार करने में आने वाली व्यावहारिक चुनौतियों पर विशेषज्ञों से चर्चा कर समाधान प्राप्त किए। कार्यक्रम के समापन अवसर पर संस्थान के संचालक प्रदीप वासुदेवा (भावसे) ने दक्षिण बैतूल, रायसेन, उत्तर पन्ना, भिंड, हरदा, इंदौर एवं कटनी वनमंडलों से आए 33 वन परिक्षेत्र अधिकारियों, वनपालों एवं वनरक्षकों को प्रमाण-पत्र प्रदान किए। प्रशिक्षण का उद्देश्य वन विभाग के क्षेत्रीय अधिकारियों एवं कर्मचारियों को माइक्रोप्लान तैयार करने, डेटा संग्रहण तथा सहभागी ग्रामीण समीक्षा (पीआरए) की आधुनिक तकनीकों में दक्ष बनाना था, ताकि बिगड़े हुए वन क्षेत्रों के संरक्षण, संवर्धन और सतत विकास के लिए स्थानीय समुदायों की प्रभावी भागीदारी सुनिश्चित की जा सके। कार्यक्रम के अंत में मुख्य अन्वेषक डा. प्रतीक्षा चतुर्वेदी ने आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर संस्थान के एसएस रघुवंशी (वरिष्ठ अनुसंधान अधिकारी), डा. डीके कुलदीप, प्रियंका वर्मा, सोनल चतुर्वेदी, सत्यम सक्सेना, हिमांशु कुशवाहा, अजय लविस्कर, विनीत मेहरा एवं सिद्धार्थ पगारे उपस्थित थे।